"विरह"

• मेरा मन लोचै - गुर दरसन ताई । बिलप करे - चात्रिक की निआई । त्रिखा न उतरै - सांत न आवै बिन दरसन - संत पिआरे जीउ ।

अर्थः- गुरु का दर्शन करने के लिए मेरा मन बड़ी तमन्ना कर रहा है जैसे पपीहा स्वाति बूंद के लिए तड़पता है पपीहे की तरह मेरा मन गुरु के दर्शनों के लिए तड़प रहा है । प्यारे संत - गुरु के दर्शन के बिना दर्शनों की मेरी आत्मिक प्यास तृप्त नहीं होती । मेरे मन को धैर्य नहीं आता ।

हउ घोली जीउ घोल घुमाई - गुर दरसन संत पिआरे जीउ ।

अर्थः- मैं पिआरे संतगुरु के दर्शन से कुर्बान हूं सदके हूँ । रहाउ

तेरा मुख सुहावा जीउ सहज धुन बाणी । चिर होआ देखे सारिंगपाणी । धंन सु देस जहां तूं वसिआ - मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ।

अर्थः- हे धर्नुधारी प्रभु जी ! तेरा मुख तेरे मुंह का दर्शन सुख देने वाला है ठण्डक देने वाला है तेरी महिमा मेरे अंदर आत्मिक अडोलता की लहर पैदा करती है । हे धर्नुधारी ! तेरे दर्शन किए काफी समय हो चुका है । हे मेरे सज्जन प्रभु ! वह हृदय - देश भाग्यशाली है जिसमें तू सदा बसता है ।

हउ घोली हउ घोल घुमाई - गुर सजण मीत मुरारे जीउ ।

अर्थः- हे मेरे सज्जन गुरु ! हे मेरे मित्र प्रभु ! मैं तेरे पर कुर्बान हूँ, सदके हूँ । रहाउ

इक घड़ी न मिलते - ता कलजुग होता । हुण कद मिलीऐ - प्रिअ तुध भगवंता । मोह रैण न बिहावै - नींद न आवै - बिन देखे गुर दरबारे जीउ ।

अर्थः- हे प्यारे भगवान ! जब मैं तुझे एक घड़ी भर भी नहीं मिलता तो मुझे जैसे कलियुग सा प्रतीत होने लगता है मैं तेरे विछोड़े में विहवल हूँ, बताओ अब मैं आपको कब मिल सकूँगा । हे भाई ! गुरु की शरण के बिना परमात्मा से मिलाप नहीं हो सकता, तभी तो गुरु के दरबार का दर्शन करने के बिना मेरी जिंदगी की रात, आसान नहीं गुजरती मेरे अंदर शाति नहीं आती ।

हउ घोली जीउ घोल घुमाई - तिस सचे गुर दरबारे जीउ ।

अर्थः- मैं गुरु के दरबार से सदके हूँ कुर्बान हूँ जो सदैव अटल रहने वाला है । रहाउ

भाग होआ गुर संत मिलाइआ । प्रभ अबिनासी घर मह पाइआ । सेव करी - पल चसा न विछुड़ा - जन नानक दास तुमारे जीउ ।

अर्थः- मेरे भाग्य जाग पड़े हैं, गुरु ने मुझे शांति का स्रोत परमात्मा मिला दिया है गुरु की कृपा से उस अबिनाशी प्रभु को मैंने अपने हृदय में ढूंढ लिया है । हे दास नानक ! कह हे प्रभु ! मेहर कर मैं तेरे दासों की नित्य सेवा करता रहूँ, तेरे दासों से मैं एक पल भर भी ना बिछड़ जाऊँ, एक रत्ती भर भी ना अलग होऊँ ।

हउ घोली जीउ घोल घुमाई - जन नानक दास तुमारे जीउ ।

(5-96-97)

अर्थः- हे दास नानक ! कह हे प्रभु ! मैं तेरे दासों से सदके हूँ कुर्बान हूँ । रहाउ

• जो सिर साईं ना निवै - सो सिर दीजै डार । नानक जिस पिंजर मह बिरहा नहीं - सो पिंजर ले जार । (2-89)

अर्थः- जो सिर प्रभु की याद में ना झुके, वह त्याग देने योग्य है भाव, उसका कोई गुण नहीं । हे नानक ! जिस शरीर में प्यार नहीं वह शरीर जला दो भाव, वह भी व्यर्थ है ।

• मितर पिआरे नूं - हाल मुरीदां दा कहिणा । तुध बिन रोग रजाईआं दा ओढन नाम - नाग निवासां दे रहणा ।

अर्थः- किसी मित्र को बताना कि आप कैसे हैं । तुम्हारे बिना हमारे लिए अमीर कंबल का उपयोग एक बीमारी की तरह है और घर का आराम सांपों के साथ रहने की तरह है ।

सूल सुराही खंजर पिआला - बिंग कसाईयां दा सहणा ।
यारड़े दा सानूं सथर चंगा - भठ खेड़िआ दा रहणा । (1-6/10)

अर्थः- हमारे पानी के घड़े यातना के खंभों की तरह हैं और हमारे प्यालों की धार खंजर की तरह है । आपकी उपेक्षा कसाईयों के हाथों जानवरों की पीड़ा की तरह है । हमारे प्रिय प्रभु का फूस का बिस्तर हमें महँगे भट्टी जैसे भवनों में रहने से अधिक प्रिय है।

- काली कोयल - तू कित गुन काली । अपने प्रीतम के हउ - बिरहै जाली । (फरीद-794)

अर्थः- अब मैं कोयल को पूछती फिरती हूँ, हे काली कोयल ! भला, मैं तो अपने कर्मों की मारी दुखी जली सड़ी हुई हूँ तू भी क्यों काली हो गई है ? कोयल भी यही उत्तर देती है मुझे मेरे प्रीतम के विछोड़े ने जला डाला है ।

- कबीर - हसना दूर कर रोवे से कर चीत । बिन रोये धर्म पाइये प्रेम प्यारा मीत ।

अर्थः- कबीर कहते हैं कि हँसी - मज़ाक छोड़कर, अपने मन को सच्चे आँसुओं भक्ति के आँसू से जोड़ो । बिना रोए अर्थात बिना विनम्रता और तड़प के, केवल धर्म - कर्म तो पाए जा सकते हैं, लेकिन प्यारे प्रेमी ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती ।

हस हस कंत न पाया जिन पाया तिन रोय । होंसी खेले पिया मिले तो कौन दुहागन होय ।

अर्थः- हँसी - ठिठोली करके या सांसारिक सुखों में खोकर प्रियतम नहीं मिलता । जो प्रियतम को प्राप्त करता है, वह दुखों और कष्टों से गुजरता है । यदि हँसी - ख़ुशी और खेल में ही ईश्वर मिल जाता, तो कोई भी 'विरहिणी' प्रेम में तड़पती आत्मा ना होती । फिर सबको ईश्वर मिल गया होता ।

सुखिया सब संसार है खाते और सोवे । दुखिया दास कबीर है जागे और रोवे । (कबीर)

अर्थः- संसार में सभी लोग सुख में हैं, वे खाते और सोते हैं । लेकिन कबीर का दास, जो जागता है और रोता है, वह दुखी है ।

- वैद बुलाइआ वैदगी पकड़ ढंढोले बांह । भोला वैद न जाणइ करक कलेजे माहि ।

अर्थः- हकीम मरीज़ को दवाई देने के लिए बुलाया जाता है, वह मरीज की बाँह पकड़ के नाड़ी टटोलता है और मर्ज़ तलाशने का प्रयत्न करता है, पर अंजान हकीम यह नहीं जानता कि प्रभु से विछोड़े की पीड़ा बिरही बंदों के दिल में हुआ करती है ।

वैदा वैद सुवैद तू पहिलां रोग पछाण । ऐसा दारु लोड़ि लहु जित वंजै रोगा घाण ।

अर्थः- हे भाई ! पहले अपना ही आत्मिक रोग ढूँढ और उसकी ऐसी दवाई तलाश ले जिससे सारे आत्मिक रोग दूर हो जाएं जिस दवाई से सारे रोग उठाए जा सकें और शरीर में सुख आ बसे ।

जित दारु रोग उठिअहि तनि सुख वसै आई । रोग गवाइहि आपणा त नानक वैद सदाइ । (1-1279)

अर्थः- जिस दवाई से सारे रोग उठाए जा सकें और शरीर में सुख आ बसे, हे भाई ! तब ही तू हकीमों का हकीम है सबसे बढ़िया हकीम है तब ही तू समझदार वैद्य कहलवा सकता है । हे नानक ! कह हे भाई ! अगर तू पहले अपना रोग दूर कर ले तो अपने आप को हकीम कहलवा कहलवाने का हकदार है ।

• नाती धोती संबही सुती आइ नचिंद । फरीदा रही सु बेड़ी हिन्न दी गई कथूरी गंध ।

अर्थः- जो जीव स्त्री नहा - धो के पति मिलने की आस में तैयार बैठी हो, पर फिर बे फिकर हो के सो गई, हे फरीद ! उसकी कस्तूरी वाली सुगधि तो उड़ गई, वह हींग की बदबू से भरी रह गई भाव, जो बाहरी धार्मिक साधन कर लिए पर सिमरन से टूटे रहे तो भले गुण सब दूर हो जाते हैं और पल्ले अवगुण ही रह जाते हैं ।

जोबन जादे न डरां जे सह प्रीति न जाइ । फरीदा किती जोबन प्रीति बिन सुकि गए कुमलाइ ।

अर्थः- अगर पति प्रभू के साथ मेरी प्रीति ना टूटे तो मेरी जवानी के गुजर जाने का डर नहीं है । हे फरीद ! प्रभू की प्रीति से वंचित कितने ही जोबन कुम्हला के सूख गए भाव, अगर प्रभू - चरनों के साथ प्यार नहीं बना तो मनुष्य जीवन का जोबन व्यर्थ ही गया ।

फरीदा चिंत खटोला वाण दुख बिरहि विछावण लेफ । ऐहु हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेख ।

अर्थः- हे फरीद ! प्रभू की याद भुला के चिंता हमारी छोटी सी खाट बनी हुई है, दुख उस चारपाई का वाण है जिससे चारपाई बुनी हुई है और विछोड़े के कारण दुख की तुलाई और लेफ है । हे सच्चे मालिक ! देख, तुझसे विछुड़ के यह है हमारा जीवन का हाल ।

बिरहा - बिरहा आखीऐ बिरहा तू सुलतान । फरीदा जित तनि बिरहु न उपजै सो तन जाण मसान । (1379)

अर्थः- हर कोई कहता है हाय ! विछोड़ा बुरा हाय ! विछोड़ा बुरा । पर हे विछोड़े ! तू बादशाह है भाव, तुझे मैं सलाम करता हूँ क्योंकि, हे फरीद ! जिस शरीर में विछोड़े का दर्द नहीं पैदा होता भाव, जिस मनुष्य को कभी ये चुभन नहीं लगी कि मैं प्रभु से विछुड़ा हुआ हूँ उस शरीर को मसाण समझो भाव, उस शरीर में रहने वाली रूह विकारों में जल रही है ।

• फरीदा रब खजूरी पकीआं माखिअ नई वहंन्हि । जो जो वंजैं डीहड़ा सो उमर हथ पवनि ।

अर्थः- ये शरीर बेचारा भी क्या करे ? इसको लुभाने के लिए चार - चुफेरे जगत में हे फरीद ! परमात्मा की पकी हुई खजूरें दिख रही हैं, और शहद की नदियां बह रही हैं भाव, हर तरफ सुंदर - सुंदर, स्वादिष्ट और मन - मोहक पदार्थ और विशे - विकार मौजूद हैं । वैसे यह भी ठीक है कि इन पदार्थों को भोगने में मनुष्य का जो - जो दिन बीतता है, वह इसकी उम्र को ही हाथ डाल रहे हैं भाव, व्यर्थ में गवा रहे हैं ।

फरीदा तन सुका पिंजर थीआ तलीआं खूंडहि काग । अजै सु रब न बाहुड़िओ देख बंदे के भाग ।

अर्थः- हे फरीद ! यह भौंका शरीर विशे - विकारों में पड़ कर बहुत जर्जर हो गया है, पिंजर बन के रह गया है । फिर भी ये कौए इसकी

तलियों पर ठूँगे मारे जा रहे हैं भाव, दुनियावी पदार्थों के चस्के और विशे - विकार इसके मन को चुभोएं जा रहे हैं । देखो विकारों में पड़े मनुष्य की किस्मत भी अजीब है कि अभी भी जबकि इसका शरीर दुनिया के विशे भोग - भोग के अपनी सत्ता भी गवा बैठा है रब इस पर प्रसन्न नहीं हुआ भाव, इसकी झाक खत्म नहीं हुई ।

कागा करंग ढढोलिआ सगला खाइआ मास । ऐ दुई नैना मति छुहउ पिर देखन की आस ।

अर्थः- कौओं ने पिंजर भी फरोल मारा है और सारा मास खा लिया है भाव, दुनियावी पदार्थों के चस्के और विशे - विकार इस अति - कमजोर हुए शरीर को भी चुभन लगाए जा रहे हैं, इस भौंके शरीर की सारी ताकत इन्होंने खींच ली है । रब कर के कोई विकार मेरी इन दोनों आँखों को ना छेड़े, इनमें तो प्यारे प्रभू को देखने की चाहत टिकी रहे ।

कागा चूडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि । जित पिंजरै मेरा सह वसै मास न तिद खाहि । (फरीद-1382)

अर्थः- हे कौए ! मेरे पिंजर में ठूँगे ना मार, अगर तेरे वश में ये बात है तो यहाँ से उड़ जा, जिस शरीर में मेरा पति - प्रभु बस रहा है, इसमें से मास ना खा भाव, हे विषयों के चस्के ! मेरे इस शरीर को चोंच मारनी छोड़ दे, तरस कर, और जा खलासी कर । इस शरीर में तो पति - प्रभु का प्यार बस रहा है, तू इसको विशे - भोगों की तरफ प्रेरने का प्रयत्न ना कर ।

• कोई आखै भूतना को कहै बेताला । कोई आखै आदमी नानक वेचारा । भइआ दिवाना साह का नानक बउराना ।

(991)

अर्थः- कोई कहता है कि नानक तो कोई भूत है क्योंकि ये लोगों से दूर रहता है कोई कहता है कि नानक कोई जिन्न है जो लोगों से परे - परे जूह - उजाड़ में बहुत ज्यादा समय टिका रहता है पर कोई बंदा कहता है नहीं नानक है तो हमारे जैसा आदमी ही वैसे है निमाणा सा जब मनुष्य एक परमात्मा के बिना किसी और को नहीं पहचानता किसी और की खुशामद मुथाजगी नहीं करता जब वह दुनिया के डरों - फिक्रों से बेपरवाह हो जाता है, तब दुनिया के लोगों की नजरों में वह झल्ला समझा जाता है ।

• सचै थानि वसै निरंकारा । आपि पछाणै सबद वीचारा । सचै महिल निवास निरंतरि आवण जाण चुकाइआ । ना मन चलै न पउण उडावै । जोगी सबद अनाहद वावै । पंच सबद झुणकार निरालम प्रभि आपे वाइ सुणाइआ ।

अर्थः- वह परमात्मा जिसका कोई विशेष रूप नहीं बताया जा सकता एक ऐसी जगह पर विराजमान है जो हमेशा कायम रहने वाली है । वह आप ही अपने आप को विचारता है और स्वयं ही समझता है । जिस जीव ने उस सदा - स्थिर प्रभू के चरणों महल में अपना ठिकाना सदा के लिए बना लिया भाव, जो मनुष्य सदा उसकी याद में जुड़ा रहता है परमात्मा उसके पैदा होने मरने के चक्करों को समाप्त कर देता है ।

हउमै मेट सबद सुख होई । आप वीचारे गिआनी सोई । नानक हरि जस हरि गुण लाहा सतसंगत सच फल पाइआ ।

(1-1040)

अर्थः- वह जो मनुष्य अपने आत्मिक जीवन को पड़तालता रहता है वही असल ज्ञानवान है, वह मनुष्य अहंकार को दूर करके गुरू के शब्द में जुड़ता है और इस तरह उसको आत्मिक आनंद प्राप्त होता है । हे नानक ! परमात्मा की सिफत - सलाह करनी परमात्मा के गुण गाने जगत में यही

असल कमाई है । जो मनुष्य साध - संगति में आता है वह यह सदा कायम रहने वाला फल पा लेता है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"